SC-102, SEM-I

महत्वपूर्ण होते हैं

बनाए रखने की अद्भुत प्रवृत्ति व्यक्त करते हैं।

दिखाई पड़ने पर भी अपने को बनाए रखने की अद्भुत प्रवृत्ति व्यक्त करते हैं। प्रत्येक सामाजिक इकाई अपने भीतर सदस्यों के कार्यों तथा अभिवृत्तियों में तब्दीली कर इस स्वरूप को कायम रखने की कोशिश करते हैं।

2. लक्ष्य सम्प्राप्ति :- (Goal attainment) सामाजिक व्यवस्था में लक्ष्यों की सम्प्राप्ति के लिए समान उद्देश्यों पर सहमति तथा उन्हें प्राप्त करने हेतु संसाधनों का प्रवर्तन अपेक्षित है। यह कार्य राज्य-व्यवस्था के माध्यम से सम्पन्न होता है। यहां ध्यान देना होगा कि 'लक्ष्य सम्प्राप्ति' तथा 'अभ्यनुकूलन' में के मध्य में जो अन्तर है वह पूर्णतः सापेक्षिक है।

3. अभ्यनुकूलन :- (Adaptation) प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था का उसके सामाजिक एवं अन्य प्रकार के पर्यावरण से एक विशेष रिश्ता बनता है। इसे ही अभ्यनुकूलन की संज्ञा दी जाती है। स्मरणीय है कि अभ्यनुकूलन में पर्यावरणजन्य परिस्थितियों से बचने के लिए एक निष्क्रिय अभियोजन मात्र ही नहीं द्योतित होता प्रत्युत इसमें अनेकानेक ऐसी क्षमताओं के विकास का बोध होता है जिनके जरिए व्यक्ति अपने अपने पर्यावरण की चुनौतियों का सामना कर पाता है और उससे अपना समझौता कायम करता है।

4. एकीकरण :- (Integration) किसी भी सामाजिक व्यवस्था में उसके घटकों के मध्य व्याप्त विभेदीकरण के फलस्वरूप एकीकरण की आवश्यकता अनुभूत होती है। कुछ हद तक पूरी व्यवस्था के घटकों को एक दूसरे तथा पूरी व्यवस्था के प्रति भी वफादार होना पड़ता है। हमारे निति में पूरे समाज के लक्ष्य तथा हित अधिकांश सदस्यों के मस्तिष्क में उतनी प्रबलता से नहीं छाए रहते हैं जितना कि उनके छोटे वर्गों के लक्ष्य उन्हें अभिप्रेरित करते हैं।

पूर्व विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि इस ... है समाज को एक पूरी व्यवस्था मानना जिसमें विभिन्न प्रकार परस्पर सम्बन्धित इकाई के रूप में कार्यशील हों। परिणामस्वरूप ... में व्यक्ति या समूहों की अपेक्षा समाज पर विशेष बल